Title: FRET NOT

Preached by Dr. w euGENE SCOTT, PhD., Stanford University
At the Los Angeles University Cathedral
Copyright © 2007, Pastor Melissa Scott. - all rights reserved

शीर्षक : **मत कुढ**

डॉ. डब्लयू. यूजीन स्काट, विशारध, स्टैनफोर्ड विश्व विध्यालय,
द्वारा लासऐंजलस के गिरजाघर में उपदेश दिया गया
अधिकार © २००७, पादरी मैलिसा स्काट - सारे अधिकार सुरक्षित

FRET NOT
मत कुढ

"मत कुढ!"... यदी आपकी बाईबल मेरी बाईबल की तरह है तो पृष्ट ६५३ निकालीये। यदी नहीं: तो भजन संहिता। भजन संहिता संख्या - ३७ यदी किसी बात को परमेश्वर एक बार से अधिक बार कहता है, इस का अर्थ यह है की वह बहुत कुछ कहना चाहता है। कई लोग ऐसे हैं जो एक ही बात को कई बार कहते हैं, क्योंकी उन के पास कहने को कुछ नहीं हैं - परन्तु जब परमेश्वर किसी बात को दौहराता है, तो इस पर ध्यान दीजीयेगा। उस का अवश्य कुछ महत्व होगा। भजन संहिता ३७, वचन १, "मत कुढ", वचन ७, "मत कुढ।"

वचन ८, "मत कुढ।" यदी यहाँ पर ऐसा कोई व्यक्ती है जिसे कभी भी किसी भी बात से चिड नहीं लगी हो, वह यहाँ से चला जाये। वे लोग जो कभी भी नहीं चिडे हों या चिड का अनुभव नहीं किया हो, वे यहाँ से चले जायें, क्योंकी आज मेरे पास आप को कहने लायक कुछ भी नहीं है।

यह एक विशेष तरह का उपदेश है। मैं गोली से भरी हुई बंदूक की तरह के उपदेश देता हुँ, वह जिसे चाहे जा कर लग जायें। मेरे उपदेश बंदूक से छूटी हुई गोली की तरह होते हैं। अधिकतर समय हम यहाँ पर इतिहास पर परमेश्वर के नियंत्रण को बताने में लगा देते हैं ताकी हम एक लक्ष्य उत्पन्न कर सकें: विश्वास..., क्योंकी पौलुस ने कहा, "सुनने से विश्वास उत्पन्न होता है और सुनना परमेश्वर के वचन से," आप को इस पर कुछ करने की आवश्यक्ता नहीं। यदी आप अधिक समय तक परमेश्वर के कार्यों के बारे में सुनते रहेंगे, तो आप उस पर विश्वास करना सीख लेंगे।

यह उपदेश मैं अपने लिये वार्षिक रूप से प्रचार करता हुँ: और यदी आप चिडचिडे हैं तो इसे सुन सकते हैं।

उन के लिये जो कुढते हैं, यह उपदेश आप को क्रम दर क्रम, एक केंद्रित जीवन की ओर ले जायेगा, जैसा की मैं अपने बारे में गिन सकता हुँ की इस के कारण मैं कई परेशानी भरे समय से होकर निकला हुँ। यह सफेद बाल जो आप देख रहे हैं, यह उम्र नहीं है, यह रास्ते की लंम्बाई है। यह उपदेश आप लोगों को १९८८ या किसी और वर्ष के अनुभवों की ओर ले जायेगा।

जो काम आप नहीं कर सकते, परमेश्वर आप से उसे करने के लिये नहीं कहता। यदी कोई प्रचारक आप से उसे करने को कहता है, तो वह... महा आत्मिक पागल है जिसे बॉन बोमैन - डैट्राइट के पादरी, जिन का मुझ पर अधिक प्रभाव है, मुझ से कहा करते थे। वे कहते हैं, "मेरे पास प्रचारक आते थे और वे लोगों से कहते थे, 'वहाँ पर कुछ है'; और वे उन पर इतना दबाव डालते थे, उस आत्मिक अनुभव को पाने के लिये जो कोई नहीं पा सकता।"

यदी मसीहत में केंद्रित सच्चाई है, तो वह नये नियम के उस सिद्धांत में है जिस से बाकी के सब मत निकले हैं: परमेश्वर मसीह में था। और रूपांतर हमें इस बात को बताता है - यूहन्ना कहता है, "तम्बू गाढना" - परमेश्वर ने मनुष्य के शरीर में तम्बू गाढा है; उस शारीरिक देह रूपी तम्बू में जिस का नाम यीशु नासरी है, प्रवेश किया; और अदृष्य परमेश्वर को आगे लाकर, साधारण जीवन की राहों पर प्रगट किया। यूहन्ना कहता है, "किसी मनुष्य ने परमेश्वर को नहीं देखा, परन्तु मसीह ने उसे प्रगट किया है।" यूनानी में जो शब्द दिया गया है वह हमारे शब्द 'श्रुतिभाष्य' का मूल है, जिस का अर्थ है, "परदे के पीछे से कार्य करना"... "प्रगट करना।"

परमेश्वर छुपे हुए थे। रूपांतर हमें बताता है की मसीह परमेश्वर के 'श्रुतिभाष्य' थे। वह उन्हें परदे के पीछे से निकाल कर ले आया, ताकी उन्हें प्रगट कर सके, उन्हें साधारण जीवन की सडकों पर ले आया। और यदी आप परमेश्वर के विषय कुछ जानना चाहते हैं तो, उसने उन्हें वहाँ पर प्रगट किया जहाँ साधारण लोग रहते हैं। बाईबल कॉलेजों में वे शायद आप को सिखाते हैं की आप इस वचन का, जो पवित्रशास्त्र में बताया गया है, श्रुतिभाष्य कर के बताये, की परदे के पीछे से कार्य करने और उसे प्रगट करने का अर्थ क्या है। कितनों ने वह अनुभव किया है जो मैंने किया है? आप गिरजाघर यह समझ कर आते हैं की आप कुछ जानते हैं और जब तक प्रचारक समाप्त करता है, उसने वचन को और आप को, दोनों को परदे के पीछे डाल दिया है, या एकदम बाहर कर दिया है।

परमेश्वर चाहता था की उसे समझा जाये, वरणा वह शारीरिक तम्बू में कभी नहीं आता। और परमेश्वर का वचन और परमेश्वर की आज्ञाऐं और परमेश्वर की प्रतिज्ञाऐं वहीं से प्रारंम्भ होती हैं जहाँ हम रहते हैं।

अब इस वचन में, "मत कुढ, मत कुढ, मत कुढ" - यह साधारण आज्ञा है। यह तीन बार कही गयी है ताकी प्रभाव इस अध्याय के अन्तिम ३७ वचन पर डाला जा सके, "मेल से रहने वाले पुरुष का

अन्तफल अच्छा है।"

अब मैं इस उपदेश को परमेश्वर की पुस्तक में से प्रयोग कर सकता हुँ; मैंने आप से कहा था की यह मेरे लिये है। मैं आज सुबह कुढते हुए उठा था। मैं इस वचन को पिछले १२ वर्ष से प्रति वर्ष सुनाता आया हुँ, केवल इस वर्ष को छोड कर परन्तु इसे दौहराना पडेगा क्योंकी मैं अभी भी कुढता हुँ। आप कुढना छोड कर शांती कैसे पायेंगे? हम देखते हैं। अब आप को समझ में आया होगा की उपदेश किस विषय पर है।

आईये हम देखते हैं।

"परमेश्वर पर विश्वास करो।" आप देखेंगे की चार या पाँच बातें हैं जो हम लोगों से करने को कही गयी हैं। इसे प्रारंम्भ करने में परेशानी होती है। इस में से कोई एसी बात नहीं है जो हम लोग न कर पायें। आप उसी समय रौशनी पायेंगे जब तार को प्लग में लगायेंगे। कुढने से लेकर शांती तक, आप परमेश्वर के अंशदान को तब तक ढीला नहीं छोड सकते जब तक हम ऐसी कुछ बाते नहीं कर लेते जो मैं बताने जा रहा हुँ। यह मसीहत का मूल है! परन्तु मैं प्रती वर्ष यह भूल जाता हुँ।

क्या आप तैयार हैं? मैं जानता हुँ की आप यहाँ आराम से बैठ कर "वेश्या" के परदे को गिरते देखना चाहते हैं। और मैं यहाँ पर आप से काम करने की बात कर रहा हुँ। मैं चाहता हुँ की, इस से पहले की परमेश्वर छूट जाये आप वह करीये जो मैं करने को कह रहा हुँ। आप कहानी जानते हैं। यह आदर्शभूत मसीहत है: "परमेश्वर, मुझे यह लॉटरी जिता दे!" स्पताह दर स्पताह वह लडका प्रार्थना करता रहा। यहाँ एक और व्यक्ती आता है - जो इस देश में दो स्पताह पहले आया था और एक बार फिर बीस लाख जीत कर चला गया। आप यहाँ पर बैठ कर कहेंगे, "परमेश्वर यह ठीक नहीं है! आप मुझे यह लॉटरी जीतने क्यों नहीं देते?" कहानी याद है? कई स्पताह के बाद परमेश्वर कहते हैं, "मुझे थोडी छूट दे, हे आदमी। जा टिकट खरीद ले!" यह टिकट खरिदने तक का भाग है।

संख्या १ - "परमेश्वर पर विश्वास करो।" वही पुरानी कहानी। हम इस शब्द को एक बार फिर विश्लेषण करेंगे। पुराने नियम में केवल दो शब्द हैं जिन का अनुवाद किया गया है "विश्वास" या "भरोसा"। आप मेरे साथ यह समाप्त कर चुके हैं।

एक शब्द है "किसी पहाडी की छाया में जाना" या "चिडिया माँ के पंखों में पनाह लेना"। जब आप पर परेशानी आती है तो आप वहाँ खडे रह सकते हैं और आप न ही विश्वास कर रहे हैं न भरोसा दिखा रहे हैं, जब तक आप किसी पहाडी की छाया में जायें या किसी चिडिया माँ के पंखों में पनाह न लें। यही कर्म है, मेरे दोस्त। इस के बारे में केवल सोचना नहीं - कार्य करना!

दूसरा शब्द है "किसी छडी का सहारा लेना" और अपना सारा बोझ उस पर डाल देना। पुराने नियम में केवल यही दो शब्द हैं जिन का अनुवाद किया गया है "विश्वास" या "भरोसा"। आप चाहे जो पुस्तक पढें; यही बात है। "विश्वास" या "भरोसा" का अनुवाद "धर्म" या "मत" या "किसी विषय के बारे में विचार करना" नहीं होता। पुराने नियम में जो "विश्वास" या "भरोसा" का अनुवाद दिया गया है, आप उस तक तब तक नहीं पहुँचते जब तक आप विश्वास से आगे बड कर अपनी देह को उस पर टाँग नहीं लेते जिस बात को आप का दिमाग प्रगट कर चुका है। दौडीये या सहारा लीजीये।

"विश्वास" के लिये नये नियम में क्या शब्द दिया गया है? यूनानी में - यह एक कार्य है जो विश्वास पर आधारित है और साहस पर टिका हुआ है। विश्वास और भरोसा, बाईबल के अनुवाद को उतना किसी ने नहीं बिगाडा जितना अंग्रेजी भाषा ने जिस में एक क्रियापद है "विश्वास करना" जिस में केवल दिमाग का उपयोग है; जब की दोनो नये और पुराने नियम में इस शब्द में न केवल दिमाग परन्तु भावनाओं का उपयोग साहस के साथ हुआ है और इस में शरीर को काबू में रखना और उसे उस पर टाँगना जिस को दिमाग मानता है और मन ने विश्वास किया है।

मैं एक जहाज को उडान भरते हुए देखता हुँ और क्योंकी मैं वायु गती शास्त्र जानता हुँ इसलिये विश्वास के साथ कह सकता हुँ की वह सही तरह हवा में उडान भरेगा। यह विश्वास नहीं है। यह भरोसा नहीं है। मैं तब तक भरोसा नहीं करता और न ही मैं विश्वासी बनता हुँ जब तक मैं जहाज के अंदर प्रवेश कर के, कुर्सी पर बैठ कर पेटी नहीं बांध लेता और अपनी देह को उस पर टाँग न लूँ।

अब आप मुझ से कहेंगे "मैं इस बात को हजारों बार सुन चुका हुँ।" आप कई कलीसीयाओं से अधिक किस्मतवाले हैं - 'परन्तु मुझे यह पता है।" आप समझते हैं की मैं नहीं जानता? मैं हजार बार सुन चुका हुँ। परन्तु चिढचिढापन मुझ पर हावी हो जाता है क्योंकी मेरे जीवन का मुख्य केंद्र ... और मैं प्रती स्पताह भूल जाता हुँ! और जब मैं भूल जाता हुँ, आप समझ सकते हैं की यह बेकार स्पताह होगा।

सब बरबाद हो जाता है। मेरा दिमाग और मेरा केंद्र और मेरी भावनायें और मेरा ध्यान और मेरी इच्छा हर बात पर केंद्रित रहती है केवल परमेश्वर को छोड। यह बहुत आसान है! ऐसा लगता है जैसे सब कुछ ठीक चल रहा है। आप को आत्मिक्ता में पागल हो कर, दिन भर घूम घूम कर यह कहना नहीं पडेगा, "जय मसीह की; जय मसीह की!" परन्तु अपनी चेतना के लिफाफे में आप अपने आप को मसीहत की मूल सच्चाई और इब्रानी मसीही विश्वास से सचेत रहते हैं या यह की आप यहाँ क्या कर रहे हैं?

क्या आप को याद है की मैंने पुराने नियम में श्रेष्ठता के बारे में बताया था जब हम विश्वास में पराक्रमी पुरुषों के बारे में पड रहे थे? क्या आप एल्लियाह और उसके चारों ओर के लोगों की श्रेष्ठता

के बारे में जानते हैं? एल्लीयाह के बारे में कुछ ऐसा था की उसे देखते ही लोग परमेश्वर को याद करने लग जाते थे। जब उसे देखते थे तो आत्मिक हो जाते थे। जब वह उस विदवा के पास आता है जो भूख से मर रही है तो वह उसे देख कर कहती है, "इस्राएल के परमेश्वर।" वह ओबध्याह के पास आता है - अच्छा व्यक्ती था क्योंकी वह भविष्यवक्ताओं को छुपाता है जब अहाब उन्हें मारने को आता है, परन्तु जब एल्लीयाह वहाँ पर आता है - तो वह आत्मिक बन जाता है, "इस्राएल का परमेश्वर जीवित है।" एल्लीयाह - आप चाहे उससे जहाँ पर भी मिलें वहाँ पर छोटी टिप्पणी रहती है: "इस्राएल का परमेश्वर जीवित है, जिस की उपस्थिती में मैं खडा हुं।" आप जितना जीवित हैं, उतना ही उस में घुसते हैं; अधिक बातें होती हैं जो परमेश्वर की उपस्थिती को और उस उपदेश को जो हम पिछले छः सप्ताह से प्रचार कर रहे हैं, छिपा देती हैं: हम पर परमेश्वर का ध्यान; मेरे और आप के बारे में उसका ज्ञान; हमारे लिये उसकी चिन्ता; हमारे जीवन में उसकी पुकार।

मैंने किसी और जीवन के तत्व ज्ञान से अधिक इस बात पर आधिक प्रभाव डाला है की, मसीहत व्यक्तित्व सिखाती है, क्योंकी परमेश्वर की योजना में हम में से हर एक जन उस के लिये कुछ न कुछ कर सकता है जो इस संसार का कोई व्यक्ती नहीं कर सकता। जब चिडचिडापन आता है तो इसे स्थगित करना होता है, और मैंने भी इसे स्थगित किया है जब चिडचिडापन की परिस्थिती से निकला हुं: "क्यो मैं भरोसा कर सकता हुं? क्या मैं परमेश्वर पर भरोसा कर सकता हुं? यही बात है।

यदी मैं सफाई से बताऊँ तो पिछले वर्ष वह जिस तरह से व्यवहार कर रहा था, मैंने कई बार संदेह किया। ऐ अपने में ही संतुष्ट कपटीयो...। पिछले वर्ष कम से कम बावन बार - यानी सप्ताह में एक बार - मैंने कहा है, "मैं उन से कह रहा हुं की तुम पर विश्वास कर सकते हैं! और तुम मुझे एक और परेशानी में ले कर आ गये।" कई बार आप को समझोता करना पडता है। मैं नहीं जानता की आज आप किस परेशानी का सामना कर रहे हैं, परन्तु आप जानते हैं की मैं इतनी बार कह चुका हुँ। मैं दर्शन नहीं पाता - काश मैं अपने पिताजी की तरह दर्शन पा सकता। मैंने कभी ७० फीट ऊँचे यीशु को नहीं देखा। यदी मैं सात इंच का दर्शन पाता तो मुझे इस का कोई घमण्ड नहीं होता। मैं अपना मुख उठाये रहता। कई बार बाईबल में जब वे किसी दूत को देखते हैं, तो वे मूँह के बल गिर जाते हैं। यह सब से निर्णयात्मक प्रमाण है की वे सच बोल रहे हैं।

मैंने अपना विश्वास खो दिया था। मैं जानता हुं की अनिश्चयता में वर्षों तक रहना कैसा होता है। मैंने पुणरुत्थान पर कडी पढाई करी है और मैं विश्वास करता हुँ की वह कब्र से जी उठा है - इसलिये नहीं की किसी ने मेरे दिमाग में इस बात को बैठाया है, परन्तु कडी पढाई के कारण। कोई और व्याख्या नहीं है। और आप जानते हैं की मैं कह चुका हुँ और मैं प्रती वर्ष प्रचार भी करता हुं, की यदी आप आ कर मुझ से कहें की यीशु ने अपने बारे में क्या कहा है, तो मैं समझुंगा की आप बहुत ही सर्मपित हैं। परन्तु यदी आप उस कब्र में से बाहर आते हैं जिस पर ताला लगाया गया था, तो मैं आप को और ध्यान से देखूँगा - विशेष रूप से कुछ दिनों बाद यदी आप नीले आकाश में उड जाते हैं। यदी मैंने परमेश्वर पर विश्वास करने की ठानी है तो, जब चिडचिडापन आता है, वह उस समय आता है जब मैं अपना ध्यान उस पर छोड बाकी सारी बातों पर लगाता हुँ। जब हम १९८८ में प्रवेश कर रहें हैं तो आप के पादरी को

स्थायी होना चाहिये: क्या परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं? ... क्योंकी यदी वह भरोसा करने योग्य है, तो मैं जाकर उस पर अपने सहारे को नया करता हुँ।

आप कहते हैं, "आप यह कैसे करते हैं? मुझे वह कहीं दिखाई नहीं देता!" मैं इसे आसान कर देता हुँ और मैं आप से कह चुका हुं की मैं आज आप का हाथ पकड कर आप को वहाँ तक ले जाऊँगा जहाँ पर परमेश्वर का भाग प्रारंम्भ होता है क्योंकी उसका भाग अच्छा है। यह कार्य का भाग है।

नये नियम में प्रतिज्ञा माँगना और समर्पण को नया करना आसान है। रोमियों की पुस्तक बताती है, "यह मत सोचो की तुम स्वर्ग में जा कर उसे लेकर नीचे आ सकोगे। यह मत सोचो की तुम गहराईयों तक जा कर उसे उपर ले आ सकोगे।" मसीही विश्वास में एक समय आता है जब परमेश्वर चाहता है की उसने जो कहा है उस पर हम कार्य करने लगें क्योंकी सबूत है की उसने ऐसा किया है।

इस्राएलीयों के पास दिन में बादल का खम्बा था और रात के समय आग का खम्बा था और हर सुबह मन्ना स्वर्ग से गिरता था, परन्तु एक समय आया - उसने यरदन नदी को दो भागों में किया - और जब वे दूसरी तरफ निकल कर आये तो मन्ना गिरना बन्द हुआ और खम्बे गायब हो गये और आग ने रास्ता दिखाना बन्द कर दिया। और उन से यह उपेक्षा करी जा रही थी की वे अदृश्य परमेश्वर और उसके वचन के पालन की दृढता पर भरोसा करना सीखें। "क्या मैं परमेश्वर पर भरोसा कर सकता हुँ?" पहले इससे निपट लीजीये। आप कहेंगे, "मैं अपनी इस समस्या पर केंद्रित हुँ!"

समस्या को भूल जाईये, पलटिये। आप भूलीयेगा मत - पलटिसे, उसे हटा दीजीये। मेरे साथ मिलकर उस समस्या से एक पल के लिये परे हटिये और अपने आप से पूछीये: आप इस वर्ष के अन्तिम सप्ताह में यहाँ पर क्यों हैं? क्या परमेश्वर पर भरोसा करने लायक हैं, या नहीं? यदी भरोसा करने लायक है, तो आप उस पर कैसे विश्वास करेंगे?

नया नियम कहता है, "उसे पाने के लिये आप को ऊँचाईयों तक जाने की आवश्यक्ता नहीं है। आप को गहराईयों तक जा कर उसे उठा कर लाने की आवश्यक्ता नहीं है। वचन तुम्हारे पास है; वह तुम्हारे मुख में है, उसे बताओ। मनुष्य मन से विश्वास करता है;और मूँह से" - यूनानी शब्द "घोषणा" है - "मुक्ती की घोषणा की गयी है।" और मुक्ती - यूनानी शब्द *सोटेरियन* है - एक पूरा क्रम है जिस में आप के जीवन की हर दिशा संयुक्त है जिस का अर्थ यह है की मनुष्य, सेहत, दर्शन, योग्यता, और अन्त में लक्ष्य के बारे में सब जान लेता है। यह मुक्ति पाने के क्रम में जो परमेश्वर ने प्रतिज्ञा करी है उस पर विश्वास करना है और उसे अपने मुख से प्रगट करना है - यह उतना ही आसान है जितना बच्चे को खाना खिलाना। आप को इससे निपटना होगा।

गिरजाघर से निकल कर जाते समय...। कई लोग प्रचारक को सुनने के बाद, वे अपने दिमाग को उस ओर लगाते हैं, और जब वे बाहर निकलते हैं तो अपने साथी से कहते हैं: "मेरी यह समस्या है।

मैं नहीं जानता की अगले सप्ताह तक मैं इससे कैसे निपटूँगा। मैंने परमेश्वर के लिये अपना छोटा कार्य कर लिया है, परन्तु इस में इतना समय लग गया है की मैं इतने समय में इस समस्या को सुलझा सकता था।" इस के बजाये मैं चाहूँगा की आज यहाँ से बाहर जाने के बाद - यह कार्य का भाग है - कहिये (केवल सोचीये मत...) कहिये - आप को अपनी देह को उस पर लटकाना होगा, "एक पल रुकिये! मैं इस मसिहत मैं क्यों हूँ?"

मेरा कहने का अर्थ यह है की, आप संसार के सब से सामान्य पापी को देख रहे हैं। मैं इस भीड के सामने स्वीकार करूँगा - यह मुझे नीचा करेगाः मैंने जीवन में कभी भी मदिरा नहीं पी है। यदी जेरी फालवेल की भीड से कहता तो वे एक दम कहतेः "परमेश्वर का धन्यवाद है!" मेरी भीड से कहता हुँ की यह आप के जीवन का वह परिमाण है जिसे मैं अभी तक पूरी तरह से नहीं समझा हुँ। मैं जो कह रहा हुँ उस पर ध्यान दीजीये, और अपने आप से पूछीये की क्या आप का धर्म उन भावनाओं से निपट रहा है, या क्या परमेश्वर है जिस पर आप भरोसा कर सकते हैं। आपके लिये उस पर कोई आकार नहीं बनाऊँगा। आप जानते हैं की वह क्या आकार लेगाः परमेश्वर ने स्वंय को मसीह में प्रगट किया। "परमेश्वर पर भरोसा रखो"!

संख्या २ - "आनन्दित रहो।" यह इतना साधारम है की मुझे गुस्सा आता है। "परमेश्वर में आनन्दित रहो।" मैं आप से कुछ कहना चाहता हुँ और आप चाहें तो इसे अपनायें या छोड दें। वेदान्ती इसे "आग्रगामी अनुग्रह" कहते हैं। संसार में गिरजाघर इसलिये नहीं है की संसार को बचाये। गिरजाघर उन लोगों का प्रतिनिधी है जो इस संसार में से बचाये गये हैं। यीशु ने कहा है, "थोडे हैं जो वहाँ जायेंगे।" आप ने मुझे पहले भी यह कहते सुना है - परमेश्वर कोई प्रचारक नहीं है जो टोपी हाथ में ले कर, काँपते हुए आप के दरवाजे के बाहर खडा हो कर भीक माँग रहा है की आप उसे भीतर लें। परमेश्वर को कुछ लोगों की आवश्यक्ता नहीं।

यीशु ने एक दृष्टाँत बताया और उसने कहा, "यदी तुम इस दृष्टाँत को नहीं समझते तो तुम उन बातों को भी नहीं समझोगे जो मैं तुम्हें सिखाता हुँ।" तुम चेले भी नहीं बन सकते जिस का अर्थ है "विध्यार्थी"। और यह "बीज बोनेवाले का दृष्टाँत" था।

चार तरह की मिट्टी है; बीज एक ही तरह का है। तीन तरह की मिट्टी उसे नहीं अपनाती। एक ... जो अच्छी मिट्टी है, अच्छे फल लाती है। वह दृष्टाँत को समझाते हुए कहता है, "मैं उनसे दृष्टाँतों में इसलिये बातें करता हुँ ताकी कुछ - यदी मैं दृष्टाँतों में नहीं बोलता जिस में सच लिपटा रहता है, कुछ लोग उसे समझने के बचाये जा सकते हैं।" जब मैं उन लोगों को देखता हुँ जिन्हें मैं स्वर्ग में नहीं देखना चाहता हुँ तो मुझे बडी खुशी होती है। मेरे पास एक बडी सूची है उन लोगों के नामों की जिन्हें मैं स्वर्ग में नहीं देखना चाहता हुँ। आप सब खुशकिस्मत हो सकते हैं, मैं निर्णय लेने वाला नहीं हुँ। परन्तु सच यह है की - और बहुत सफाई से यह बताया गया है - उसने, यीशु ने ... सच को दृष्टाँतों में लपेटा क्योंकी वह

कुछ लोगों का धर्म परिवर्तन नहीं चाहता ता। "उह?" क्या आप जानते हैं की संसार समझता है की कलीसीया हाथ में टोपी पकडे भीख माँग रही है...। यह ऐसा ही है, "यदी मैं किसी और को नहीं पकड सकता तो मैं इस उपयोग की गयी औरत को लाभ दिलाता हुँ।" परमेश्वर इतना कठोर नहीं!

जिन दिनों मैं कॉलेज में पढाता था, मेरे बेटे ने मुझ से कहा, "जब तक परमेश्वर मुझे प्रचारक बनने के लिये नहीं बुलाता, मैं तब तक मसीही नहीं बनूँगा।" मैंने कहा, " बेटा, तसल्ली रखो! परमेश्वर उतना कठोर नहीं है जितना हम समझते हैं।" परन्तु जो "बुलाये गये हैं" उन के सिद्धान्त होते हैं, और यही बात अग्रगामी अनुग्रह हमें बताता है - परमेश्वर प्रारंम्भ करता है। और संसार की नीव डालते ही परमेश्वर, एक संख्या बनाने लगा। आप जब परमेश्वर की ओर झुके हैं, तो चाहे आप का अनुभव जो भी हो, आप को वह एक हादसा लगा होगा। कई लोग ऐसे हैं जिन्होंने कलीसीया छोड दी है, परन्तु अपने मन की गहराईयों में उन्होंने परमेश्वर को नहीं छोडा है, और उसने भी उन्हें नहीं छोडा।

बुलावा और परमेश्वर का चुनाव - परमेश्वर का वचन कहता है, बिना पश्चताप के है या जिसे हम "उन से पलट जाना" कहते हैं। और जब परमेश्वर आप को चुन लेता है, चाहे उस रौशनी ने आपके अन्दर जैसे भी प्रवेश किया हो, आप में उस "चुने जाने" के निशान अवश्य मिलेंगे। उन में जवाब देने की प्रतिक्रिया होती है। उन को ज्योती देखने के लिये आँखें होती हैं। जब आप उसे जलाते हैं तो साक्षी उतपन्न होती है। मैं उन लोगों को जिन्होंने बुलावे की पुकार को सुना है - चाहे श्रेष्ट शब्द की खोज हो, वह झटका हो, वह लाभ हो, वह योग्यता हो, या परमेश्वर के किसी विचार को छोडना नहीं चाहते हों- उन से कहना चाहूँगा की उस पर भरोसा रखो।

मैं बस यही कहना चाहता हुँ। फिर परिक्षण करीये की आप इस परेशानी में क्यों हैं...। मैं इस वचन को हजारों बार पढ चुका हुँ। मैं इसे याद कर चुका हुँ। इसे याद करने के लिये मुझे सण्डे स्कूल में अंक मिले थे। मेरे पास उसका अर्थ था और जब मैं उसका परिक्षण करने लगा तो मुझे बहुत बडा धक्का लगा क्योंकी मुझे पता चला की उस वचन का क्या अर्थ है: "परमेश्वर में आनन्दित रहो; वह तुम्हारे मन की इच्छाओं को पूरा करेगा"!

"ठीक है परमेश्वर! यह तुम्हारा भाग है। मेरा भाग कहाँ है? मुझे अभी बताईये।" मैं उस में आनन्दित रहूँगा जो मेरे मन की इच्छा को पूरा करेगा। यदी तुम मेरे मन की इच्छा को पूरा करोगे तो तुम को मेरे से अच्छा आन्नद पहुँचाने वाला नहीं मिलेगा। पहली लहर के बाद मुझे अपने मन की इच्छाओं को उतारने के लिये एक वर्ष लग जायेगा। "परमेश्वर में आनन्दित रहो; वह तुम्हारे मन की इच्छाओं को पूरा करेगा"! की मसीही सच आत्माविरोधी होते हैं। अंग्रेजी भाषा को नहीं पता की उसके साथ क्या व्यवहार किया जाये। हम अरिस्टोटेलियन अर्थशास्त्र पर आधारित हैं: "यदी...; फिर..." - तो मैं परमेश्वर को अनन्दित करने के लिये तैयार था। उसका कहने का अर्थ यह नहीं है!

किसी भी रिश्ते में एक समय आता है, और मसीहत का दैवी प्रकाशण वाला परमेश्वर मनुष्य है,

और मानव रिश्तेदारी में - मुझे यह बात समझ में नहीं आती ...। "प्रेम" के लिये यूनानी में तीन शब्दों का प्रयोग किया गया है: *ईरौस,* हम एक पल में इस से निपट लेंगे - इस से शब्द बनता है "कामुक"। सब को इस शब्द का अर्थ पता है, इसलिये मैं आप का समय नष्ट नहीं करूँगा।

फिलियो, जिस से फिलाडलफिया बनता है - इस समय की करैन्ट नामक पुस्तक में इस के बारे में बताया गया है, तो आप को पता होना चाहिये की *फिलियो* क्या है। यह परस्पर है: मैं आप के लिये करता हुँ; आप मेरे लिये। मुझे अपने लिये देख भाल करने की आवश्यक्ता नहीं क्योंकी मेरी देख भाल आप करते हैं। मैं जो कुछ भी आप के लिये करता हुँ - बाकी सब अपने आप हो जाता है - आप मेरे लिये करते हैं। और हम जीवन भर इस तरह की रिश्तेदारी खोजते रहते हैं। यदी कोई मेरे लिये कुछ करता है तो मुझे उसके लिये करने में कोई परेशानी नहीं होती। असत्याभास हमारे रचेता ने ही डाला है - उसने हमें बनाया - आप *फिलियो* को खोज सकते हैं, सारे जीवनभर में यह परस्पर संतुलन है। उसको खोजने का अर्थ है की उसे पा लेना। यह सहजज्ञान से प्रारंम्भ होता है, परन्तु जब कहा जाता है तो आप समझ लेते हैं की यह सच है: *फिलियो* को खोजने का कार्य उसे पहुँच से बाहर कर देता है।

जिस पल मुझे यह गात होता है की आप मुझ से कुछ पाने के बदले में मेरे लिये कुछ कर रहे हैं - मैं कुछ नहीं कर सकता, आप को इसी तरह बनाया गया है - मैं अपने लिये खोजना प्रारंम्भ कर देता हुँ। आप गिनीये की आपने मेरे लिये क्या किया, और बदले में मुझ से क्या पाना चाहते हैं, और मैं अपनी तरफ के नफा और घाटे की सूची देखूँगा - यहाँ पर केवल मैं अकेला पापी नहीं हुँ।

यदी किसी समय पर कोई बिना मुझ से कुछ उपेक्षा करे मेरी सहायता करता है, तो मैं अपनी योग्यता के अनुसार उस की ओर अच्छाई दिखाता हुँ। यदी मैं नदी में डूब रहा हुँ और इस बात को जानता हुँ, और अपने जीवन को दाव पर लगा कर मुझे किनारे तक खेंच लाते हैं, तो किनारे आते ही मैं आप के साथ प्रेम की बातें करना शुरी नहीं कर देता। प्रेम का कानून ऐसा ही है। बिना बदले में कुछ उपेक्षा करे आप बलिदानपूर्वक मेरे लिये कुछ करते हैं। एक चुंम्बक की तरह, मैं बदले में कुछ करना चाहता हुँ। इसे *अगापो* कहते हैं। परमेश्वर ने इसी प्रेम की आज्ञा दी है। पवित्रशास्त्र में कहीं उसने *फिलियो* की आज्ञा नहीं दी। पवित्रशास्त्र में कहीं उसने *ईरौस* की आज्ञा नहीं दी। *अगापो* वह प्रेम है जो एक वस्तु से दूसरी वस्तु की ओर इसलिये बहता है क्योंकी उसने उस वस्तु में कुछ वास्तविक मूल्य देखा है। आप उस वस्तु पर जो प्रेम करने लायक है भरोसा या बलिदान करते हैं; और लोक विरुद्धता से, इस में कुछ स्वार्थीपन नहीं है।

लोक विरुद्धता से, जब इस तरह का प्रेम उमडता है तो उससे *फिलियो* उत्पन्न होता है। हर मसीही सच्चाई के अनुसार आप इस रास्ते से जाते हैं तो वह रास्ता मिलता है; आप मर कर जीवित रहते हैं; अन्त में रह कर आप अव्वल आते हैं। आप को *फिलियो* इसलिये नहीं मिलता क्योंकी आप उसको खोजते हैं, परन्तु इसलिये मिलता है क्योंकी जिस वस्तु से आप प्रेम करते हैं, उसके मूल्य के कारण आप बह कर उस तक पहुँचते हैं - बिना इस विचार के की आप को बदले में कुछ मिलेगा आप *फिलियो* को पाते हैं। यहाँ पर भी यही अर्थ है।

इस कारण कुछ ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के प्रती अलग तरह से अनुभव करते हैं, जो परमेश्वर की पुकार है जो तुम को मिट्टी बनाती है जिस को बीज का इंतजार है, या आँखें बनाती है जिन को ज्योती का इंतजार है। परन्तु परयाप्त मसीही वर्णन के लिये तृप्त होना आवश्यक है। इस कारण मुझे उन प्रचारकों से नफरत है जो लोगों को नरक की ओर ले जाते हैं।

यदी आप इस बात को समझें की सब से अच्छे समय में हम बेकार और खोये हुये थे; और जैसे हम थे, उस समय परमेश्वर ने अपना सब से अच्छी वस्तु हमें दी और उस के बेटे ने अपनी जान दी क्योंकी उस ने मुझ में और आप में कुछ स्वभाविक बहुमूल्यता देखी - वे लोग जिन में उसने प्रतिवचन या प्रतिवादन की योग्यता डाली ताकी हम ज्योती को देख कर प्रतिवादन कर सकें...। आप मेरे बारे में चाहे जो समझें, मैं जानता हुँ की परमेश्वर ने जैनी स्काट में कुछ तो देखा होगा। वह उस के साथ जो कार्य कर रहा है, उस में आपको अधिक उन्नती नहीं दिखेगी; परन्तु परमेश्वर ने कुछ तो देखा है, और यदी अन्नतकाल तक कोई प्रतिवादन न करता तो भी वह मेरे लिये यही करता।

और जब आप मूल सच को पहचान जायेंगे...। इस कारण मैं अनुग्रह और शांती का उपदेश देता हुँ और यह दणड का कूडा करकट नहीं। परमेश्वर के चारों ओर पूर्णता है। इब्रानीयों में जो पवित्रशास्त्र है, वह बताता है की उसने गिरे हुए दूतों को बचाने के लिये अपनी जान नहीं दी, परन्तु इसलिये की अन्नतकाल तक भविष्यवक्ता उस रहस्य को देखने के लिये संघर्ष करते रहें; और पतरस की पत्री बताती है की दूतों ने नीचे छुक कर इस रहस्य का परिक्षण करना चाहा की परमेश्वर गिरे हुए दूतों के पीछे न जा कर आदमीयों और औरतों में ऐसा क्या देखा की वह उन को मुक्ती दिलाने के लिये अपने बेटे को दे दिया। चाहे मैं पसन्द करने लायक हुँ या नहीं, जैसा की यह गीत कहता है, परमेश्वर ने "मेरी गलतीयों को नज़रअंदाज़ कर दिया"; और अपने आप को सौंप दिया ताकी वह बाढ को गिरा कर मेरे मन के तारों को छू सके और मुझे रौश्नी की ओर ले चले।

कई बार ऐसा हुआ है की मैं उसकी ज्योती को स्वीकार करना नहीं चाहता था, परन्तु आज मैं धन्यवाद देता हुँ और आप भी ऐसा कर सकते हैं। कुछ बात होगी जो आज आप यहाँ आये हैं - किसी प्रकार का झटका, कुछ अनुभव की परमेश्वर आप का ध्यान रखता है और उस के दिमाग में आप को लिये कुछ बात है। और चिडचिडेपन में अचानक समझने लगता हुँ: "परमेश्वर में आनन्दित रहो।" यदी मेरा आनन्द मुझ में कम और उस पर अधिक केंद्रित हो, "वह मेरे मन की इच्छाओं को पूरा करेगा।"

तीसरा। यह केवल एक ढाँचा है। अपने ७०-सहृगटन के जूते पहन लीजीये क्योंकी अब हम चलने वाले हैं। यह मूल ढाँचा की यहाँ पर पहुँचने के लिये मुझे आप के दिमाग के साथ कुश्ती लडनी पडी: क्या परमेश्वर भरोसा करने लायक है? क्या आप उसके पास दौड के जाने के लिये तैयार हैं? "मेरे पास यह समस्या है।" एक पल के लिये अपना ध्यान मोडिये। यह कोई उलझी हुई बात नहीं है। आप बच्चों के साथ घर आते हैं और आप के पास समस्याऐं हैं, परन्तु आप की चेतना के लिफापे में, एल्लीयाह की तरह जो कभी भी परमेश्वर की उपस्थिती को नहीं भूलता था, आप इस व्यक्ती के लिये

जगह बनाते हैं। आप के पास साथी हैं, और आप का कुढना आप के और साथीयों के बीच आता है, परन्तु आप इन प्रिय जनों के लिये घर बनाईये वरना यह रिश्ता टूट जायेगा।

जब हम १९८८ में प्रवेश कर रहे हैं, चाहे आपकी जो समस्या हो, क्या आप परमेश्वर पर भरोसा करेंगे? इसलिये लगातार उसके पास दौड कर आईये, और कैसे करना है, यह मैं बता चुका हुं। इसे जटील मत बनाईये।

आपको न तो हाथों के बल खडा होना है, न ही अपनी देह को आग लगानी है। मूँह शरीर को रास्ता दिखायेगा। बस अपनी समस्या के मध्य रुक कर कहीये, "एक पल रुको, जैनी!" "मनुष्य मन से विश्वास करता है, और मुख से प्रगट करता है।" ऐसा लगता है जैसे चारों ओर से वे सब आ रहे हैं, परन्तु मैं ५८ का हुँ और मैंने अपना विशवास बिटोरा है, जब भी मैं उसके पास दौड कर गया हुं, उसने मुझे कभी भी नहीं छोडा। १९८८ में मैं अपनी समस्याओं को अपनी ऐडी और परमेश्वर को अपना मुख दिखाने के लिये तैयार हुं। " परन्तु मेरे दिमाग में कुछ बातें हैं जो मैं परमेश्वर से करवाना चाहता हुं।" एक पल रुकिये। मेरे पास पिछले वर्ष भी कुछ योजनायें थीं परन्तु वे कुछ काम नहीं आयीं, इस वर्ष भी कुछ योजनायें थीं। यदी मैं और मेरा परमेश्वर एक दूसरे को समझते हैं तो फिर इन योजनाओं को परे करो। परमेश्वर में आनन्दित रहने का अर्थ यही है। यही पूरी बात है।

अब हमें तेज़ जाना होगा। "इस बात का चीन मे चाय के दाम से क्या काम? अब मेरी स्थिती यही हुई। बडा "अ"! मुझे पता है की चाहे जो बात हो परमेश्वर पर भरोसा किया जा सकता है। चाहे जो दबाव हो मैं उसके पास दौड कर जाऊँगा; और जब सब उबल कर समाप्त हो जाये तब परमेश्वर सब कुछ ले सकता है, जब तक वह और मैं उस वस्तु को एक दूसरे के साथ रख सकें। इस का मेरी समस्या से क्या काम? मैं यहाँ पर समस्याओं के बीच अयूब के जैसे बैठा हुआ हुं। मेरे पास समस्याऐं अभी भी हैं और उसके साथ उन्हें बाँट चुका हुं। मैं उस पर विश्वास करता हुं और मैं परमेश्वर को संतुष्ट करना चाहता हुं और मैं चाहता हुं की वह मुझे संतुष्ट करे और वह इस बात को जानता है, और मुझे किसी और को सबूत देने की आवश्यक्ता नहीं।" और ना ही आप को सबूत देने की आवश्यक्ता है।

हमारी समस्याओं का क्या?

ठीक है! "अपने मार्ग की चिंता यहोवा पर छोड।" (वचन ५) क्या आप जानते हैं की मूल शब्द क्या था? किंग जेम्स का अनुवाद नहीं बताता है। "अपने मार्ग की चिंता यहोवा पर छोड।" (वचन ५) क्या आप को वचन मिला? उस के नीचे रेखा खींच दीजीये! "अपने मार्ग की चिंता यहोवा पर छोड।" आप यह कैसे करते हैं?

मूल लेख में जो शब्द है वह "लुढकाना" है .. और यह ऊँटों की गाडीयों में बोझा भरने को संम्बोधित करता है। बोझा ढोने वाला, बोझ उठा कर लाता है और बैठे हुए ऊँठ की पीठ पर अपना भार

लुढका कर चला जाता है। शब्द का यही अर्थ है। "अपने मार्ग परमेश्वर पर लुढका दे।" अब "अपने मार्ग" - इस का क्या अर्थ है? यह वह सब कुछ है जो आप से नाता रखता है - आप की योजनायें, आप की गडबडी... क्या मैं बकवाद से थकान पहुँचा रहा हुँ? जो भी बात आप से तालुक रखती है, उसे लुढका दीजीये।

क्या आप जानते हैं की आप को आज मेरी परेशानीयाँ बताने में कितना समय लगेगा? मुझे मत बताईये। मैं नहीं....। बहुत हो गया। आप कैसे पाते हैं... ? आप यह कैसे करते हैं? मैं चाहता हुँ की आप व्यवहारिक बने रहें क्योंकी अभी हम आपके भाग की तरफ हैं। क्या मैंने आप को नये नियम का नुसखा बताया है: "मन से मनुष्य विश्वास करता है; मुख से प्रगट करता है"?

अब आप को पता चला की ये मसीही प्रार्थना करते हुए कीडे के गुच्छे हैं। वे हर जगह पाये जाते हैं: "वू- वू- वू!" (मैं चाहता हुँ की आँखों से - देखने वाला - कुत्ता स्वर्ग का विश्वाधिकार पाये, क्योंकी परमेश्वर से बात करते समय हर मसीही को आँखें बन्द करनी पडती हैं।) मैं उन्हें स्वर्ग में घूमते हुए देख सकता हुँ, "वह कहाँ मिलता है?"

और क्या वे सच में पवित्र बन जाते हैं। क्या आप ने कभी इस बात पर ध्यान दिया है की वे अपनी आवाज को कैसे बदलते हैं? जब तक वे परमेश्वर से बात नहीं करते तब तक वे सामान्य रूप से बात करते हैं, और उसके बाद, 'हे खुदा!" यदी मैं परमेश्वर होता तो कहता, "अपने मूँह बन्द करो और मुझ से उस तरह बात करो जैसे हर किसी से बात करते हो।"

मत्ती ६। यीशु ने कहा, "जब तू प्रार्थना करे तो कपटीयों के समान आराधनालयों में और सडको के मोडों पर खडे हो कर मत कर। अपनी कोठरी में जा, और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर। तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।"

आत्मिक्ता में कुछ पेंचिला नहीं है। कई लोग, बजाये आत्मिक बनने के, केवल दिखाने के लिये अपनी आत्मिक छवी बनाने में लगे रहते हैं। आप गुप्त रीती से करीये - यदी आप कोई दृष्य खडा नहीं करना चाहते, यहीं पर फुसफुसाते रहीये। आप कहीये, "ठीक है, मैं इसे करूँगा।" मैं अपने बोझ को परमेश्वर पर कैसे लुढकाऊँ? क्या वह तलाक और दिवालियापन जैसी समस्याओं के बारे में चिन्तित है? ... दिल के दौरे के बारे में? यकीनन। आप बोलीये। कई लोग केवल अपने धर्म के विषय में सोचते हैं। आज कहीं जा कर आपके मन में जो बात है उसे कह डालें; दिल की बात कह दीजीये। आप कहीये, 'परमेश्वर, मैं इस बात से कुढ रहा था। मैं खुश हुँ की हम आप से उस तक जा सकते हैं।" आप कहीये: "मनुष्य मन से विश्वास करता है; मूँह से मुक्ती के बारे में प्रगट करता है।"

और आप कहेंगे, "लीजीये परमेश्वर मैंने अपने मार्ग, समस्या और स्वंय खुद को भी तेरे हाथों में सौंप दिया है।" "यह इतना आसान नहीं हो सकता! यदी यह इतना आसान होता तो कई लोग इसे करते!" क्यों की यह इतना आसान है, इस कारण हम बुद्धिमान व्यक्ती इसे नहीं करते। "अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड।" "पादरीजी, क्या आप गंम्भीर हैं?" आप इस पर विश्वास करीये! क्या ऐसा करेंगे? "हाँ!" इस का अर्थ यह है की आप में से कुछ लोग जो मेरे लिये समस्या बने हुए थे, परमेश्वर अब आप से निपटेगा। वे परमेश्वर से प्रार्थना करेंगे की मुझे वापस भेज दे। "अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड।" वहाँ परमेश्वर फिर से करता है: "उस पर भी भरोसा करीये।"

और फिर ७ वचन - मुझे इस भाग से नफरत है। मुझे इस अध्याय में सब कुछ पसन्द है केवल इस भाग को छोड कर। मुझे समर्पण के भाग से, भार को लुढका देने के भाग से, कोई परेशानी नहीं है। मैं वह सब कर चुका हुँ। वह ठीक है।

अब संख्या ४ - "परमेश्वर में विश्राम कर।" उसे दे दीजीये! मैंने अपने आप को कोठरी में बन्द कर लिया है और मेरे दिमाग में यह समा भी गया है। मैं प्रचार करने के लिये उत्तेजित हुँ, क्योंकी आज मेरे पास परमेश्वर के साथ बात चीत करने के लिये बहुत कुछ है। मैंने इस बारे में पूरे वर्ष प्रचार नहीं किया है; और अभी कर रहा हुँ, मैंने अपने आप से निश्चय कर लिया है की मैं सब कुछ परमेश्वर पर छोड दूँगा। मेरे पास एक सूची है। यदी मेरी आँखें आप को चमकीली लग रही हैं - तो मैं इस उपदेश को दूँगा क्योंकी मैंने इस को कई बार बताया है - मैं यहाँ पर अपनी सूची को तैयार कर रहा हुँ। परमेश्वर, आप इसे पूरा करेंगे!

फिर यह भाग आता है: "परमेश्वर में विश्राम कर।" "उऊँ?" यही पर छोड दो। विश्राम। "उऊँ? कोई विश्राम नहीं है.... संसार में कोई ऐसा रास्ता नहीं है की मैं विश्राम करूँ, क्योंकी यह परमेश्वर के हाथ में हैं - संसार में कोई तरीका नहीं है! मुझे हर पल उस पर दृष्टि रखनी है। जब आप कुछ वस्तु परमेश्वर को सौंपते हैं तो आप को नहीं पता की वह उसके साथ क्या करने जा रहा है - और फिर वह और भी कठिन कर देता है। "धीरज से उसकी प्रतीक्षा कर"! परमेश्वर ने इस सृष्टि की रचना सात दिनों में की और मैंने उस को थोडा सा दिया है...।

जब मैं परमेश्वर से तुलना करता हुँ तो मुझे मेरी परेशानीयाँ छोटी लगती हैं। "परमेश्वर, मैं आपका निरक्षण करने सुबह ९.०० बजे फिर आऊँगा, और इस काम को कर देना!" धीरज से प्रतिक्षा करो। "जीतनी भी मैंने बेफकुफी भरी बातें सुनी हैं, यह सब से बड कर है। यदी मैं जान लेता की परमेश्वर इतने धीरे कार्य करेंगे, तो मैं उन को तकलीफ नहीं देता।" धीरज से प्रतिक्षा करो।

हम वापस वहीं आ गये - क्या मैं उस पर भरोसा कर सकता हुँ? मुझे पूरी रीती से नहीं पता... एक घण्टा हो सकता है, या दो दिन? मुझे नहीं पता।

आत्मिक दुनिया में भी कुछ कानून हैं जो उतने ही प्रबल हैं जितने की सामान्य संसार के कानून। मैं आप को शांती के लिये प्रमेश्वर का नुसखा बता रहा हुँ। आप अपने पाखण्डीपन से पहले निपटीये। क्या आप उस पर भरोसा रख सकते हैं? क्या वह सच में... समझीये की आप परमेश्वर की खोज में संघर्ष कर रहे हैं। यदी हम सीधी तरह कहें तो, क्या आपके मन में उस के लिये मुख्य स्थान है? मैं अपने माता पिता से प्रेम करता हुँ, परन्तु यदी वे मुझे विश्वास दिलायें की परमेश्वर चाहता है की मैं एक तरफा यात्रा कर कल कलकत्ता जाऊँ, तो मैं जाने के लिये तूफान मचा दूँगा।

"अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड।" मैं जानता हुँ की यह कैसे किया जाता है। यही वह भाग है - मेरा कहने का अर्थ यह है की ... मैं इस भाग पर कार्य करऊँगा।

मैं इस उपदेश को इस बात से जल्द अन्त करता हुँ की परमेश्वर क्या करता है। मैं आप को कुछ दिखाना चाहता हुँ। परमेश्वर के वचन में यह है...। मैं कई वर्षों से यह प्रचार कर रहा हुँ की यदी आप अपना एक कदम परमेश्वर की ओर बडाते हैं, तो आप के कदम के ज़मीन पर पडने से पहले वह आप को मिल जायेगा। वह आप की ओर से इस प्रारम्भ का इंतजार करता है जो उसके प्रारम्भ का जवाब है जिसने आप में इस पुकार को डाला। परन्तु इससे पहले की आप अपने कार्य के कडे भाग पर पहुँचें, मैं आप को उसके भाग को दिखाता हुँ।

"परमेश्वर पर भरोसा रखो"... "परमेश्वर में आनन्दित रहो"... "अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड।" जो पाँच कार्य हमें करने हैं उन में से अब तक हम तीन तक ही पहुँचे हैं, है न? जब तक तीसरी बात होती है जहाँ हम परमेश्वर पर अपना भार डाल देते हैं...।

जिस समय आप यह कदम उठाते हैं - अपने पाखण्डीपन को दूर करीये, भरोसा रखीये और अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड दीजीये - जिस समय आप वह तीसरा कदम उठाते है, "विश्राम" और "धीरज से प्रतिक्षा" तक पहुँचने से पहले, वह क्या बताता है? "अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड और उस पर भरोसा कर।" वह क्या बताता है? मेरे लिये पढीये। "वही पूरा करेगा।" क्या ही भयंकर अनुवाद।! वह अन्त का नतीजा बताता है परन्तु वचन का अनुवाद नहीं करता। आप कोई सी भी टिप्पणी देख लीजीये। आप अपने शहर के किसी भी पुस्तकाल्य जो कर खोज लीजीये। मैं आप को बताता हुँ की साधारण और सामान्य रूप से यह क्या कहता है। इब्रानीयों में यह बहुत ही साधारण है: "अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड और वह कार्य करेगा।" बस यही है।

यह बस यही कहता है की जिस पल आप अपने आप को शांती और तैयारी के साथ परमेश्वर पर छोड देते हैं, परमेश्वर उस पर कार्य करने लगता है - जिस पल आप अपने मुख से अपने मन की बात बताते हैं और उस पर छोड देते हैं, नय नियम बताता है, मैं फिर से दोहराता हुँ, "उसे पाने के लिये

आप को कहीं जाने की आवश्यक्ता नहीं। केवल उस बात को अपने मुख से बोलीये। जो शब्द आप के मुख में है, बोलीये। मनुष्य मन से विश्वास करता है; मुख से स्विकार कर के मुक्ती पाता है।" जिस समय आप अंगीकार करेंगे - (आप आज भी कर सकते हैं), परमेश्वर कार्य करने लगता है। वह कार्य करने लगता है। वचन यह नहीं कहता की वह तुरन्त समाप्त करता है। वह कार्य करता है।

मैं ५८ वर्षो से यह गडबड करते जा रहा हुँ। वह इसे एक घण्टे में क्यों पूरा नहीं करता है? "यह लीजीये परमेश्वर। इसे पूरा करीये! बाईबल जो बताती है उसे करते करते मैंने अपनी सेहत खराब कर ली है...।

- आप को पता हैं, मैं जिम्मी स्वागर्ट और जैर्री फाल्वेल को पाप के बारे में प्रचार करते सुन थक गया हुँ। उन को यह भी पता नहीं है की कैसे करना है। मेरा कहने का अर्थ है की ये बिचारे...। सब से अच्छा कार्य जो यह लोग कर सकते हैं वह...। क्या आप पॉल पिपकिन को जानते हैं? जब वह आप के मध्य प्रचार करने आया तो वह अपनी जीवन कथा सुनानेवाला था। सब से अच्छा कार्य जो उसने बचपन में किया था, वह पानी में से बत्खों को भगाना था। मेरा कहने का अर्थ है... जिम्मी बेकर! एक झटका और वह संसार का सब से बडा पापी कहलायेगा - और जो आखरी बार मैंने सुना, चौदह मिनट - चौदह मिनट पाप से भरे हुए। मैं कितना ज्ञानी हुँ यह आप को बताता हुँ। आप घर लौटीये और अपना समय निश्चित करीये। (आप को यह सब जैर्री फाल्वेल की कलीसीया में नहीं मिलेगा। मैं यह बात पूरे विश्वास के साथ कह सकता हुँ)।

... नय नियम में पाप को साधारणता से बताया गया है: "हम सब भेड की नायी भटक गये हैं; हम सब अपने ही बनाये हुए मार्ग पर चलते हैं।" परमेश्वर ने बताया की जो बात पाप को योग्यता देती है वह स्वतंत्रता और दृढ संक्लप है क्योंकी उसने बताया की स्वतंत्रता के बिना क्या नहीं किया जा सकता - खुल कर प्रेम देना, विश्वास का स्वतंत्रता से विश्राम करना।

इस का विक्लप स्वतंत्रता का गलत उपयोग है। "हम सब भेडों की नाई भटक गये हैं; हम सब ने अपना ही मार्ग चुन लिया है" - यही मेरी जीवन कथा है और आप में से कई लोगों की भी यही कथा है। पूरी गडबडी करने के बाद हम परमेश्वर को सौंपते हैं: "वह कार्य करता है।"

आप ने अपनी सेहत बिगाड ली है - यह ओरल रॉबर्ट का कहना है - यह मत सोचीये की वह आज एक नया हृदय आप के अन्दर डाल देगा! परन्तु वह उस पर कार्य करेगा। "परमेश्वर कार्य करता है।" और क्या? मैंने उसको सब सौंप दिया है। "परमेश्वर सब जानता है।" (वचन १८) "परमेश्वर सब जानता है।" जब मुझे कोई परेशानी होती है, तो मुझे बहुत कुछ समझाना पडता है; और जब तक बात समाप्त होती है तब तक उस बातचीत के कई अर्थ निकल आते हैं। हम सब इस संघर्ष में लगे रहते हैं की कोई हमें समझे। "परमेश्वर कार्य करता है, उसे सब पता है।" मुझे वह दिन याद है जब मैं ताईवान में

एक होटल में बैठ कर किसी की गालीयाँ सुन रहा था। मैंने अपनी बाईबल खोली और... ऐसा मेरे साथ हमेशा नहीं होता है, परन्तु इस बार वह खुल गयी।

"परमेश्वर, आप मेरा उठना और बैठना जानते हैं, आप मेरे विचारों को जानते हैं। यदी मैं नरक में अपना बिछौना लगाऊँ तो तू वहाँ पर है। यदी मैं सवेरे के पंख लगा कर समुद्र की ऊँचाईयों तक भी जाऊँ, तो तू वहाँ भी मुझे रोक लेगा।" चाहे जहाँ भी जाऊँ। "यदी मैं कहूँ की यह अंधकार मुझे ढाँक लेगा तो रात भी रौशनी बन जायेगी।" वह हर बात को जान लेता है। आप को परमेश्वर के वचन पर भरोसा करना पडेगा - मैंने स्वंय से कई बार पूछा है...। (और जिस तरह से मैं परमेश्वर से बात करता हुँ, मैंने कई बार मेरे पिताजी को डरा दिया है।) मैं हर बार यह सोचता हुँ की मैं अपने लिये एक सुरंग बना लूँगा ताकी परमेश्वर मुझे न देख सके। पता नहीं वह कैसे जान जाता है की मैं क्या करने वाला हुँ। आप समझ रहे हैं न की मैं क्या कहना चाह रहा हुँ? "जब आप स्वंय को सौंप देते हैं, तो वह आप पर कार्य करता है। वह ज्ञान के साथ कार्य करता है।" मुझे नहीं पता की जो गिठानें मैंने बाँदी हैं उन्हें कैसे खोलूँ। परन्तु वह जानता है की हर एक धागा कहाँ है...। मेरा कहने का अर्थ यह है की यह विश्वास का कार्य बहुत पेचिदा है। जब हम १९८८ में जा रहे हैं तो मैं चाहूँगा की आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलें। "अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड।"
वह तुरन्त कार्य करता है।

हाँ ठीक है! "परमेश्वर सब जानता है।" हाँ, वह जानता है।

"उसके कदम...।" अगली बात क्या है? मैं आगे बड सकता हुँ। "उसके कदम...।" (वचन २३), "अच्छे चलन के व्यक्ती से परमेश्वर प्रसन्न होता है।" "ऊँ?" ठीक है मैने अपने मार्ग उसको सौंप दिये; मैं उस पर विश्वास करता हुँ, मैं उस में आनन्दित रहता हुँ। मैंने अपने मार्ग उस को सौंप दिये हैं। वह जानता है इसलिये वह ऐसी बातें बतायेगा जिन का मुझे अनुमान ही नहीं था...। वह जानता है की मेरे दुश्मन क्या कदम उठाने वाले है। वह उन की योजनाओं को जानता है; यह ऐसा है जैसे हमारे लिये कोई जासूस कार्य कर रहा हो।

"परमेश्वर आदेश देता है।" यह सच है। जब भी मैं स्वंय को उसे सौंपता हुँ - (मैं वहाँ पर इतना अटक जाता हुँ) - जब भी मैं स्वंय को परमेश्वर को सौंपता हुँ, जो पहला कदम वह उठाता है, मैं जानता हुँ की उसे वह कदम नहीं उठाना चाहिये था। क्या आपने इस पर कभी ध्यान दिया है? मैं रविवार को अपने मार्ग परमेश्वर को सौंपता हुँ - फयू! पहली रात को मुझे इतनी शांती मिली जो पूरे वर्ष में नहीं मिली थी। मैं उठ कर परमेश्वर का धन्यवाद देता हुँ, "आप सही हैं, परमेश्वर।" सोमवार को ७ बजने तक, उसने सब कुछ उडा दिया! कोई भी व्यक्ति जिस के पास दिमाग है वह जानता है की यह गलत है। और मैं कहता हुँ, "बैठ जाईये परमेश्वर। मैं सब कुछ फिर से ठीक कर देता हुँ और आप अगली बार कोशिश करीये।" क्या आप समझ रहे हैं की मैं क्या कह रहा हुँ?

विअटन के राष्ट्रपती, वी. रेमण्ड एडमन, ने इस विषय पर एक बार लिखा था। उन्होंने कहा की लोग अपने मार्गों को परमेश्वर को सौंपते हैं और फिर... यह एक पत्र को डाक में डाल देने की तरह है। आप डाक घर तक जा कर पत्र को डालते हैं। संसार के झटकों की प्रतिलीपी है; डाक के डिब्बे में डाला जाना। हम कार में बैठ कर कहीं जाकर कुछ पीने के लिये चले जाते हैं, कहीं जाकर कुछ पीने के लिये। हम जानते हैं की कार्य हो गया है। संसार को झटका देने वाली बात डाक डिब्बे में डाल दी गयी है, और हम भूल गये हैं। हम विश्राम करने लग जाते हैं। हम विश्राम के साथ नतीजे का इंतजार करते हैं। आप कितनी बार डाकघर गये हैं और किसी व्यक्ती को डाक डिब्बे के छेद में हाथ डाल कर खडे हुए देखा है? "आप क्या कर रहे हैं?" "मुझे यकीन नहीं है की वे इस चिट्ठि को पहुँचायेंगे, इसलिये मैं निर्णय ले रहा हुँ। मैं डाक सेवा के बारे में निर्णय ले रहा हुँ। यह अतिआवश्यक पत्र है। इस का असर मुझ पर होगा और मैं... मैं करीब हुँ, परन्तु जब तक मुझे यकीन नहीं हो जाता मैं इसे नहीं छोड़ूँगा।" अन्त में आप उसे डाल देते हैं, और फिर एक हैलिकॉपटर ले कर डाक घर का चक्कर काटते रहेंगे की वे पत्र को चिकागो पहुँचाता है की नहीं - परन्तु आप यकीन करना चाहते हैं की वह डैनवर हो कर जाये और हाउस्टन से होते हुए न जाये, इसलिये आप हर ट्रक का पीछा करेंगे।

"मैं चाहता हुँ की वह चिकागो पहुँचे, परन्तु मुझे जाने का सही रास्ता भी पता है!" आप में से कितनो ने डाक ट्रकों का पीछा किया है? हम परमेश्वर से अधिक संयुक्त अम्रिका के डाक विभाग पर भरोसा करते हैं। और आप कहते हैं की आप परमेश्वर पर भरोसा करते हैं?

"परमेश्वर सब जानता है।" वह न केवल कार्य करने लगता है, परन्तु वह ज्ञान के साथ कर्य करता है, और "परमेश्वर आदेश देता है।" आज मैं अपने सफेद बालों के लिये परमेश्वर का धन्यवाद देता हुँ क्योंकी जब मैं प्रचार कर रहा हुँ तो कुछ यादें लौट आती हैं, उन समयों की जब मैं जानता था की यदी परमेश्वर उस कार्य को नहीं करेगा तो मैं उसे कर लूँगा। मैं प्रारम्भ करता हुँ; मैंने उसे सही किया! परन्तु जब मैं गडबड में फँस जाता हुँ...। मेरा विश्वास करीये, मैं परमेश्वर को याद दिलाने में माहिर हुँ की इस योजना में मैं कितना महात्व रखता हुँ। उसने तो देखा भी नहीं की क्या करना है। मैंने उसके लिये जो किया यह सोच कर किया की यदी मैं करने लगूंगा तो वह जागेगा और पहचानने की कोशिश करेगा की क्या करना है...।

मैं उसे स्वर्ग में सभा करते हुए देख सकता हुँ: 'जैनी फिर हम से आगे निकल गया। कुछ दूतों को ले कर नीचे जाओ। हमें यह उसके प्रारम्भ करने से पहले ही करना चाहिये था। अब नीचे जा कर उसे उस कार्य को पूरा करने में उसकी मदद करो!" ठीक है?

हम परमेश्वर से अधिक संयुक्त अम्रिका के डाक विभाग पर भरोसा करते हैं। जब आप योमवार की सुबह उसे देते हैं तो थोडा रुकीये। अपना कार्य करने के लिये तैयार हो जाईये "अच्छे व्यक्ती की चाल परमेश्वर का आदेश है"; और मैं परमेश्वर के कार्यों के सबूत के आधार पर कह रहा हुँ जब आप स्वंय को उसे सौंप देते हैं और जब आप का अवस्था स्थिर है, तो परमेश्वर आप को मार्ग दिखायेगा। इसलिये

जब आप कल सुबह उठ कर देखते हैं की सारी छत टूट कर गिर गयी है... (आज की रात आपने सब कुछ परमेश्वर को सौंप दिया है), और कल एक तूफान आप के घर से टकराता है - परमेश्वर का धन्यवाद करीये की आप घर के निचले हिस्से में थे; उठ कर यह बात जान लीजीये की परमेश्वर आप की छत को साफ करने में लगे हैं। यही विश्वास है। आप इस ढंग से उठिये की मुझे चाहे जो हो, परमेश्वर ने इसकी आज्ञा दी है।

"मैंने अपने मार्गों को परमेश्वर के हाथ सौंप दिया है, परन्तु अब यह तलाक सामने आ गया है, और मैं इंतजार कर रहा हुँ...।" क्या आप को वह वाक्या याद है जब एक लडके ने रात में मुझे फोन किया? और उसने कहा, "मैं क्या करता हुँ?" उसने शायद मेरा प्रचार सुना था, और अपने रास्तों को परमेश्वर को सौंप दिया था - और मुझे यह फोन आता है: "मैं कडका हो गया हुँ और मेरी पत्नी मुझे छोड कर चली गयी है।" मैंने कहा, "बहुत थोडे लोग ऐसे होते हैं जिन्हें आप की उम्र में दुबाराह से नयी तरह से प्रारम्भ करने का मौका मिलता है!"

"मैंने अपने मार्गों को परमेश्वर के हाथ सौंप दिया है।" हम में से कई लोग ऐसा ही करते हैं। "ठीक है परमेश्वर, मैं आप पर भरोसा करता हुँ। आप मुझे आनन्दित करते हैं। मेरे सामने तालाक है और मैं इस औरत के बिना नहीं जी सकता, इसलिये मैं अपने मार्गों को आप को सौंपता हुँ।" जब लोग मुसीबत में होते हैं तो कितने आत्मिक हो जाते हैं। वे परमेश्वर के साथ बहुत मोलभाव करते हैं - धूर्त धर्म! आप अपने मार्ग परमेश्वर को सौंपते हैं और अगली सुबह आप को खबर आती है की वह किसी और से शादी करने जा रही है। फिर आप वहाँ पर बैठ कर कुढने लगते हैं और सोचने लगते हैं की कैसे किसी को मारा जाये। महोदय... परमेश्वर आप के लिये जगह साफ कर रहा है ताकी आप किसी और अच्छे को तलाश कर सकें। यही ढंग होना चाहिये। यदी आप ने परमेश्वर को सौंप दिया है तो, धीरज से प्रतिक्षा करीये क्योंकी परमेश्वर तुरन्त ज्ञान के साथ कार्य करने लग जाता है, और वह आप के मार्ग को आदेश देगा। यदी आप इस बारे में बहस करना छोड दें तो वह आप को बारूद की सुरंग से सही सलामत निकाल लायेगा। आप समझ रहे हैं न?

अगला कार्य क्या है? अब तक उसने करीबन सब कर लिया है। "परमेश्वर तुम्हारा हाथ थामें रहता हैं।" "चाहे वह गिरे तौभी पडा न रह जाएगा, क्योंकी यहोवा उसका हाथ थामे रहता है।" यदी आप इस ढंग से अपना जीवन व्यतीत करेंगे, परमेश्वर को अपने मार्ग सौंपना और विश्राम के साथ प्रतीक्षा करना, तो मैं आप को बता देता हुँ की कहाँ पर आक्रमण होगा।

जब आप लडखडाते हैं, तो दोष लगाने वाला आ कर कहता है की तुम ने उसे फूँका है, और अब तुम्हारी बारी समाप्त हो गयी है। मुझे मसीहत के बारे में जो बात पसन्द है - यदी सही तरह समझे - वह यह है की हर लडखडाहट और गिरने पर परमेश्वर राह दिखाता है। "चाहे वह गिरे तौभी पडा न रह जाएगा, क्योंकी यहोवा उसका हाथ थामे रहता है।"

जब तक एल्लीयाह निर्दोष था, परमेश्वर उस पर कठोर था - उसे झरने के पास भेजा जो सूख चुका था और विधवा के पास भेजा जिस के पास कुछ भी नहीं था। अन्त में जब वह गिरा, परमेश्वर ने एक दूत को भेजा ताकी वह उसे एक रोटी सेक कर दे।

आपने मुझे यह बात कई बार कहते सुना होगाः यह कोई दुरघटना नहीं की जिस ने परमेश्वर को निराश किया उसे ही पेंटीकोस्ट के दिन प्रचार करने के लिये चुना जिस के कारण कलीसीया बनी। कई लोग ऐसे थे जो उन के कोट को खींच कर कहते, "बैठ जाओ! मैंने आप को पहले भी कहते सुना है, और तुम ही हो जिस ने परमेश्वर को ठुकराया है, इसलिये तुम नहीं बोलोगे!"

मैं आप को साधारण नुसखा बताता हुँः परमेश्वर पर भरोसा करो, अनन्दित रहो, विश्राम करो, धीरज से प्रतीक्षा करो। जब आप सौंप देते हैं तो परमेश्वर तुरन्त कार्य करने लग जाता है और वह ज्ञान के साथ करता है। वह भागों को सुलझा सकता है। वह तुम्हारे मार्गो को आदेश देता है।

"यदी मैं लडखडाऊँ तो क्या?" (जब आप सौंपने की राह पर चलने लगते हैं तो यह अवश्य होता है।) इसीलिये मैं आज भी यहीं हुँ। मेरे लिये बहुत ही लम्बा था यह सौंपना और मैं कितनी बार लडखडाया हुँ यह गिन नहीं सकता। शैतान ने मुझ से कहा - वह मुझे कभी नहीं पायेगा... की मैं दावे छोड दूँ। वह मुझे उस समय पछाडता है जब मैं सोचता हुँ की मैं परमेश्वर के आगे निकल आया हुँ, या परमेश्वर को चूक गया हुँ, या मैं राह से भटक गया हुण। जब मैं लडखडाता हुँ तो बडी प्यार से वह आ कर कहता है, "ऐ बेकार आदमी, तेरे पास कोई प्रार्थना नहीं है!" " चाहे वह लडखडाये" - शैतान के दातों में इसे घुसा दो! - "वह पडा न रहेगा।"

जब परमेश्वर आप को बुलाता है, परमेश्वर की पुकार और चुनाव, बिना पश्चताप के होते हैं। इस से मुझे कोई परवाह नहीं की आप ने एक वर्ष पहले स्वंय को सौंपा होगा और ३६५ दिनों तक लडखडाते रहे हैं, "चाहे वह गिरे तौभी पडा न रह जाएगा, क्योंकी यहोवा उसका हाथ थामे रहता है।"

आयत २८। "परमेश्वर अपने भक्तों को न तजेगा" - "भक्त" वह शब्द है जो सौंपने से आता है। यह कर्मकाण्ड सम्बंधी शब्द है, जिन्होंने अपने मार्ग परमेश्वर को सौंप दिये हैं। चाहे आप जिताना भी गिरे तौभी पडे न रह जाऐंगे, क्योंकी यहोवा उनका हाथ थामे रहता है।

अन्तिम प्रतिज्ञा हैः "यहोवा उनकी सहायता करके उनको बचाता है" - मुझे यह पसन्द है - "उनको दुष्टों से छुडा कर उनका उद्धार करता है।" अन्तिम प्रतिज्ञा उद्धार है। अब आप निर्णय ले सकते हैं की आपका परमेश्वर के पास आना फलहीन था, या आप परमेश्वर का धन्यावाद कर सकते हैं उस पहली पुकार के लिये... उस छोटी सी बात के लिये जो तुम को संसार के अन्य लोगों से अलग करती है जो परमेश्वर के बारे में या वह जो करता है उस बारे में कुछ विचार नहीं करते।

वे लोग जिन में परमेश्वर ने वह छोटी सी उत्तरदायीत्व की योग्यता डाली है, मैं आज आप से कहता हुँ - और इस पर्ष का यह मेरा अन्तिम उपदेश है...। आप वह ढंग का ढाँचा पाते हैं, और यदी आप इस निश्चय पर आ गये हैं की आप परमेश्वर पर भरोसा करते हैं जिस की सेवा आप कर रहे हैं, और उस में अनन्दित हैं, तो अपने मार्गों को उस को सौंप दो। यदी आप पहली बार सौंप रहे हैं, तो धीरज के साथ विश्राम कीजीये। जिस पल आप सौंपते हैं, वह उसी पल से कार्य करना प्रारम्भ कर देता है। आप में से कुछ ने यहाँ बैठे हुए स्विकार किया होगा, जब आप अपनी कार में बैठ कर घर जा रहे होंगे..., सेनाओं का प्रभु जो तारों को भी अपनी जगह पर स्थिर रखता है वह आप की परेशानी पर उस ज्ञान के साथ कार्य करेगा जो आप के पास नहीं है।

भरोसा रखीये की वह आप के कदमों को आदेश देगा और यदी वह आप के साथ कोई गलत मार्ग पर जा रहा है तो शिकायत मत करीये। जब आप लडखडाते हैं, तो उठीये और दुबारा प्रारंम्भ करीये क्योंकी आप पडे न रहेंगे। वह आप को अपने हाथों से पकडे रहेगा। वह आप को छोडेगा नहीं, वह आप को उन सब से मुक्ती दिलायेगा। १९८७ में आप के साथ मेरा यह वादा है। अगले रवीवार मिलते हैं।

अधिकार © २००७, पादरी मैलिसा स्काट - सारे अधिकार सुर
Copyright © 2007, Pastor Melissa Scott. - all rights reserved